यादों के झरोखे से

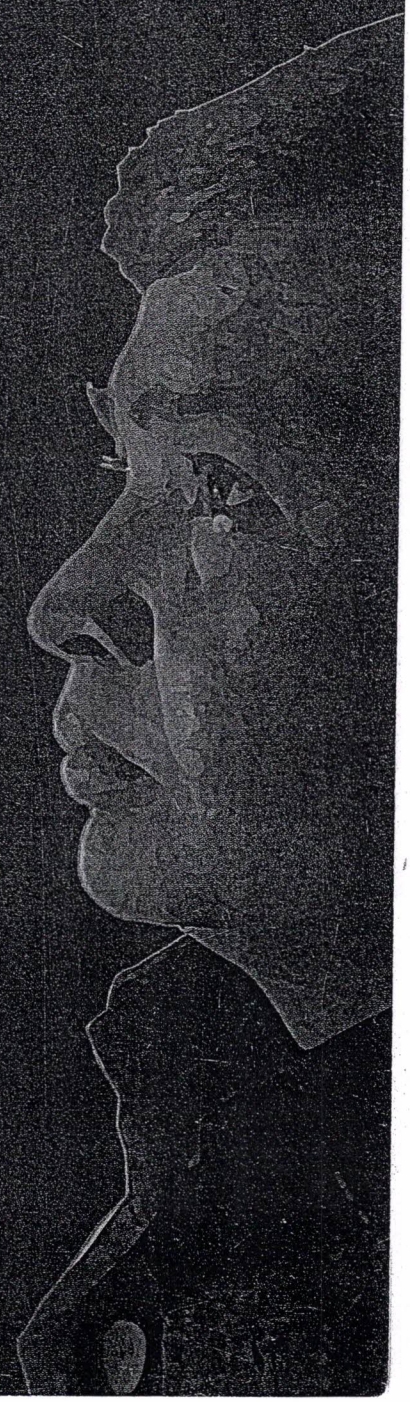

मुंजाजी धुराजी इंगोले

गर्दों के झरोखे से

आत्मकथा

आत्मकथाकार

डॉ० एम० डी० इंगोले

हिन्दी विभागाध्यक्ष व संशोधन मार्गदर्शक

कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,

गंगाखेड, जिला परभणी (महाराष्ट्र)

मो०–9970721935, 9421552691

ISBN : 978-81-932762-6-6

प्रथम संस्करण : 2017

प्रतियाँ : 500

मूल्य : 70.00 रुपये

सर्वाधिकार © : उषा मुंजाजी इंगोले

कम्पोजिंग एण्ड डिजाइनिंग

धर्मेन्द्र कुमार वर्मा

प्रकाशन

बुद्ध अम्बेडकर कल्याण एसो०, उ० प्र० (रजि.)

356 / 340 / 835 राजगार्डेन कालोनी, आलमनगर, लखनऊ–22601

मो०–9415941920, ई–मेल:baks.gpjakhmi@gmail.com

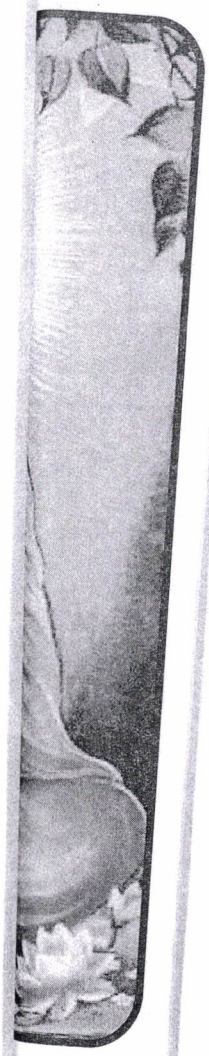

अनुक्रम

क्र.सं.		पृष्ठ संख्या
i.	प्रकाशकीय	7
ii.	यादों के झरोखे से	8
iii.	अपनी ओर से	13
1-	मिलन	15
2-	निंदक नियरे राखिये	21
3-	दूसरी डॉ० भीमराव आंबेडकर जयंती	35
4-	प्रारब्ध	49
5-	झेंप	63
6-	दलित विद्यार्थी आश्रम	70
7-	प्रतिशोध	82
8-	तेरी यादों के झरोखे से	90

जालना – 01.01.93

।। नमः बुद्धाय।।

प्रिय मनोज,

सर्वप्रथम मेरी ओर से नव वर्ष की शुभकामनाएँ स्वीकार कीजिए। यह वर्ष तुम्हें आनंदमय तथा उन्नति से भरा हुआ बीते। तुम्हारे जीवन में कोई भी दु:ख, संकट न आए। तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर खुशी हुई। मेरा शुभ विवाह चौबीस जनवरी को है। उसमें शामिल होने के लिए तुम भी जरूर आना। मैं अभी से निमंत्रण देती हूँ। निमंत्रण कार्ड जल्द ही भेज दूँगी। मेरी ड्यूटी ठीक चल रही है। तुम्हारी ड्यूटी कैसी चल रही है, जरूर लिखना। छुट्टियों के बाद कार्य में व्यस्त होने के कारण मैं तुम्हें पत्र भेज नहीं सकी।

पत्रोत्तर जरूर जल्दी देना।

Your's Freind

Lata

गोंदी – 11.03.93

।। नमः बुद्धाय।।

प्रिय मनोज,

सा. जयभीम।

आप मेरे विवाह के में आए उसके लिए शत्:शत धन्यवाद। मैंने आभार व्यक्त करने के लिए देरी कर दी, इसलिए गुस्सा न करो। मैंने यहाँ की सर्विस छोड़ दी है। मैं अपने गाँव (बुलढ़ाणा) जा रही हूँ। इसलिए इस पते पर पत्राचार न करें। एखाद बार मैं परभणी आकर आपसे मिलूँगी। मेरा काव्य संग्रह संभालकर रखना। बाकी सब ठीक–ठाक है।

Your's Freind

Lata

पत्राचार द्वारा एक दूसरे को दो साल तक बिना मिले–देखे ऐसी अनोखी मित्रता निरंतर चलती रहीं। उसने कई बार कई पत्रों में औरंगाबाद आ कर मुझसे मिलने के वादे किये, किन्तु वो नहीं आई। मेरे एम.ए.का अंतिम नतीजा आने पर उनसे मिलने का पहला अवसर मिला तो वह भी मित्र के जरिए। हुआ यह कि अंबड के मत्स्योदरी महाविद्यालय में मराठी विषय के लिए आवेदन पत्र देने हेतु मुझे मित्र ने भेजा। वहाँ से गोंदी नज़दीक ही थी। जहाँ वह हाईस्कूल में मुख्याध्यापिका थी। उससे मिलने का प्रसंग भी बड़ा मज़ेदार है। मैं जब गोंदी में उसके स्कूल में पहुँचा तब वह किसी कक्षा की तासिका पर थी। मेरे हाथ में केवल एग्ज़िकेटीव फाईल मात्र थी और कुछ नहीं। मैं जैसे ही उसके ऑफिस में पहुचा, सिपाही तुरंत मॅडम को बुला लाया और वह आई, सिपाही भी वहीं खड़ा था। वह अपनी कुर्सी की तरफ़ बढ़ी, बैठी, मुझसे जवाब तलब करने लगी। उसने मेरा हुलिया देखकर मुझ पर पहला ही सवाल दागा ''क्या आप शेख है?'' मैं ने कहा ''नहीं'', क्योंकि किसी शेख नाम का कैंडिडेट स्कूल में ज्वाइन होने के लिए आने वाला था। वो धोखा खा गई। फिर मेरा सीधे नाम पूछा, और मैंने भी थोडा अपने आप पर क़ाबू पाने का अभिनय किया। कहा– ''मैं शेख नहीं मनोज हूँ।'' मेरे मुँह से जैसे ही नाम क्या निकला उसके हाथ से पानी का ग्लास छूट गया। वह अपनी खुशी को रोक न पाई। उसकी यह स्थिति देखने जैसी थी। उसे तुरंत पास में खड़े सिपाही का एहसास हुआ तो हँसी पर क़ाबू पाते हुए उसे कक्षा छोड़ देने का आदेश देकर ऑफिस से बाहर किया। मुझ से मुख़ातिब होकर वहाँ से तुरंत घर ले गई। एक दूसरे को करीब से देखने–महसूस करने का सिलसिला यहाँ थम तो गया, किन्तु उसकी शादी होने तक पत्राचार जारी रहा। अब जब भी कभी उसकी याद आती है, तो उसके ख़तों के झरोखे मुझे पिछली ज़िंदगी में लौटा देते हैं।